णिरयगईए जहण्णए पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाण० असंखे० गुणो। केवलदंसणा० विसे०। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। अपच्चक्खाण० विसे०। पच्चक्खाण० विसे०। ओहिणाणावरण० अणंतगुणो। ओहिदंसणावरण० विसे०। णिरयाउ० असंखे० गुणो। वेउव्विय० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसेसा०। णिरयगइ० संखे० गुणो। अजसकित्ति० विसे०। दुगुंछा० संखे० गुणो। भय० विसे०। सोग० विसे०। हस्स० विसे०। अरदि० विसे०। रदि० विसे०। णवुंसयवेद० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतरा० विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदिणाण० विसे०। अचक्खुदंस० विसे०। चक्खुदं० विसे०। संजलण० विसे०। णीचागोद० विसे०। असाद० वविसे०। साद० विसे०। एवं णिरयगईए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो।

नरकगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। नरकायुका असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। नरकगतिका संख्यातगुणा है। अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेष अधिक है। शोकका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। अरतिका विशेष अधिक है। रतिका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। असातावेदनीयका विशेष अधिक है। सातावेदनीयका विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

तिरिक्खगईए जहण्णगो पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाण० असंखे० गुणो। पयलाए विसे०। णिद्दा० विसे०। पयलापयला० विसे०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धी० विसे०। केवलदं० विसे०। अपच्चक्खाण० विसे०। पच्चक्खाण० विसे०। ओहिणाण० अणंतगुणो। ओहिदंस० विसे०। तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो। ओरालिय० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। वेउ० विसे०। जसकित्ति-अजसगित्ति० विसे०। दुगुंछा० संखेज्जगुणो। भये विसे०। हस्स० विसे०। सोगे (म प्रतिपाठोऽयम्। अ प्रतौ 'दुगुंछाए० विसे० सोगे०', का प्रतौ 'दुगुंछाए विसेसं गए सोगे', ता प्रतौ 'दुगुंछाए संखेज्जगुणो। सोगे' इति पाठः।) विसे०। रदि-अरदीसु विसे०। णवुंसयवेदे विसे०। इत्थि-पुरिसवेदे विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदिणाण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। संजलण० विसेसाहिओ। णीचागोद० विसे०। उच्चागोद० विसे०। खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सण्णीसुप्पज्जिय संजमासंजमं घेत्तूण पुणा मिच्छत्तं पडिवज्जिय गुणसेडीओ गालिय पुणो वि संजमासंजमं पडिवज्जिय आवलियसंजदासंजदस्स उदयट्ठिदिग्गहणादो। सादासादाणं विसेसाहिओ। एवं तिरिक्खगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो।

तिर्यंचगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। तिर्यंचआयुका असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। शोकका विशेष अधिक है। रति और अरतिका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। स्त्री और पुरुषवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष

अधिक है, क्योंकि क्षपितकर्मांशिकस्वरूपसे आकर, संज्ञियोंमें उत्पन्न होकर, संयमासंयमको ग्रहण कर, फिर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर, गुणश्रेणियोंको गलाकर, फिरसे भी संयमासंयमको प्राप्त होकर आवलिमात्र संयमासंयमकी उदयस्थिति यहाँ ग्रहण की गयी है। उच्चगोत्रके जघन्य प्रदेशोदयसे साता व असाता वेदनीयका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है। इस प्रकार तिर्यंचगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाण० असंखे० गुणो। पयलए विसे०। णिद्दाए विसे०। पयलापयलाए विसे०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। केवलदंसणावरण० विसे०। अपच्चक्खाण० विसे०। पच्चक्खाण० विसे०। ओहिणाण० अणंतगुणो। ओहिदंस० विसे०। मणुस्साउअ० असंखे० गुणो। ओरालियसरीर० असंखे० गुणो। वेउ० विसे०। तेया० विसे०। कम्मइय० विसे०। मणुसगईए संखे० गुणो। जसकित्ति-अजसकित्ति विसेसाहिओ। दुगुंछाए संखे० गुणो। भय० विसे०। हस्स-सोगे विसे०। रदि-अरदि० विसे०। अण्णदरवेदे तुल्ला विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जवणाणावरणे विसे०। सुदणाणावरणे विसे०। मदिआवरणे विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। उच्चणीच० विसे०। सादासाद० विसे०। आहारसरीरे० असंखे० गुणो। तित्थयर० असंखे० गुणो। एवं मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्व का असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञ ाानावरणका अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनका विशेष अधिक है। मनुष्यायुका असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरका अनंतगुणा है। वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। मनुष्यगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्य व शोकका विशेष अधिक है। रति व अरतिका विशेष अधिक है। अन्यतर वेदका तुल्य विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञ

ानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। ऊँच व नीच गोत्रका विशेष अधिक है। साता व असातावेदनीयका विशेष अधिक है। आहारकशरीरका विशेष अधिक है। तीर्थंकरप्रकृतिका असंख्यातगुणा है। इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

देवगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अपच्चक्खाणे असंखे० गुणो। पच्चक्खाणे विसेसा०। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाणावरणे० असंखे० गुणो। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। केवलदंस० विसे०। दुगुंछाए अणंतगुणो। भय० विसे०। हस्स० विसे०। रदि० विसे०। पुरिसवेदे विसे०। संजलणाए अण्णदर० विसे०। ओहिणाण० असंखे० गुणो। ओहिदंसण० विसे०। देवाउ० असंखे० गुणो। वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। देवगइ० असंखे० गुणो। जसकित्तीए विसे०। अजसकित्तीए विसे०। सोगे संखे० गुणो। अरदि०विसे०। इत्थिवेदे० विसे०। दाणंतरा० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदि० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। उच्चागोदे विसे०। सादासाद० तुल्लो विसेसाहिओ। एवं देवगईए जहण्णपदेसुदयदंडओ समत्तो।

देवगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्वका संख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। जुगुप्साका अनन्तगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। रतिका विशेष अधिक है। पुरुषवेदका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। देवायुका असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। देवगतिका असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिका विशेष अधिक है। अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। शोकका संख्यातगुणा है। अरतिका विशेष अधिक है। स्त्रीवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका

विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है। साता व असातावेदनीयका तुल्य विशेष अधिक है। इस प्रकार देवगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

असण्णीसु जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो सासणपच्छायदं पडुच्च उदीरणोदओ त्ति। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाण० असंखे० गुणो। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। पयलापयलाए विसे०। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। केवलदंसण० विसे०। अपच्चक्खाण० विसे०। पच्चक्खाण० विसे०। णिरयाउ० विसे०। देवाउ० विसे०। तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो। मणुसाउ० विसेसा०। ओरालियसरीर० असंखे० गुणो। तेजा० विसेसाहिओ। कम्मइय० विसे०। वेउव्विय० विसे०। तिरिक्खगइ० संखे० गुणो। जसकित्ति-अजसकित्ति० विसे०। मणुसगइ० विसे०। देवगई० विसे०। दुगुंछा० संखे० गुणो। भय० विसे०। हस्स-सोगे विसे०। रदि-अरदि० विसे०। अण्णदरवेदे विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतरा० विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। वीरियंतरा० विसे०। मणपज्ज० विसे०। ओहिणाणा० विसे०। सुदणाण० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। संजलणाए विसे०। णीचागोदे० विसे०। उच्चागोदे विसे०। सादासादाणं विसेसा०। एवमसण्णिपंचिंदिएसु जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो।

असंज्ञी जीवोंमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है, यह सासादन गुणस्थानसे पीछे मिथ्यात्वमें आये हुए जीवकी अपेक्षा उदीरणोदय स्वरूप है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नारकायुका अनन्तगुणा है। देवायुका विशेष अधिक है। तिर्यंचआयुका असंख्यातगुणा है। मनुष्यायुका विशेष अधिक है। औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। मनुष्यगतिका विशेष अधिक है। देवगतिका विशेष अधिक है। नरकगतिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्य व शोकका विशेष अधिक है। रति व अरतिका विशेष अधिक है। अन्यतर वेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक

है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है। साता व असातावेदनीयका विशेष अधिक है। इस प्रकार असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

एत्तो भुजगारपदेसउदओ। तत्थ अट्ठपदं -- जमेण्हिं पदेसग्गमुदिण्णं तत्तो अणंतरउवरिमसमए बहुपदेसग्गे उदिदे एसो भुजगारो णाम। जमेण्हिपदेसग्गमुदिदं अणंतरउवरिमसमए तत्तो थोवदुरे पदेसग्गे उदयमागदे एसो अप्पदरउदओ णाम। तत्तिए तत्तिए चेव पदेसग्गे उदयमागदे अवट्ठिदउदओ णाम। अणंतरादीदसमए उदएण विणा एण्णिमुदयमागदे एसो अवत्तव्वउदओ णाम। एदेण अट्ठपदेण सामित्तं। तं जहा -- मदिआवरणस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदओ कस्स? अण्णदरस्स। एवं सव्वकम्माणं। णवरि जासिं पयडीणमवत्तव्वमत्थि तं (ता प्रतौ 'मत्थित्तं' इति पाठः।) जाणिय वत्तव्वं।

यहाँ भुजगार प्रदेशोदय का अधिकार है। उसमें अर्थपद कहा जाता है -- इस समय जो प्रदेशाग्र उदयको प्राप्त है उससे अनन्तर आगेके समयमें बहुत प्रदेशाग्रके उदित होनेपर यह भुजाकार प्रदेशोदय कहा जाता है। जो इस समय प्रदेशाग्र उदित है उससे अनन्तर आगेके समयमें स्तोकतर प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर यह अल्पतर प्रदेशोदय कहलाता है। उतने उतने मात्र प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर अवस्थित प्रदेशोदय कहलाता है। अनन्तर बीते हुए समयमें उदयके बिना इस समय उदयको प्राप्त होनेपर यह अवक्तव्य उदय कहा जाता है। इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है -- मतिज्ञानावरणका भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदय किसके होता है? वह अन्यतर जीवके होता है। इसी प्रकारसे सब सब कर्मोंके सम्बन्धमें स्वामित्वका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि जिन प्रकृतियों का अवक्तव्य प्रदेशोदय है उसका कथन जानकर करना चाहिये।

एयजीवेण कालो। तं जहा -- मदिआवरणस्स भुजगारउदओ केवचिरं कालादो होदि? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदरउदओ केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमस्स असंखे० भागो। अवट्ठिदवेदगो केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं मदिआवरणभंगो।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा इस प्रकार है -- मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अल्पतर

उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है। वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्ष से संख्यात समय मात्र रहता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है।

(चक्खु)अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं पि मदिआवरणभंगो। णिद्दाए अवट्ठिदवेदगो केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं ? जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एवं सेसचदुण्णं दंसणावरणीयपयडीणं। सोलसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिद्दाभंगो। सादस्स भुजगार-अप्पदरउदओ केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा (अ प्रतौ 'उक्क० अंतोमुहुत्तं छम्मासा' इति पाठः।) । अवट्ठिदउदओ केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० संखे० समया। असादस्स भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिद० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया।

(चक्षुदर्शनावरण) अचक्षुदर्शनावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण की प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्राका अवस्थित वेदक कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। उसका भुजाकार और अल्पतर वेदक कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है। साता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास रहता है। उसका अवस्थित उदय कितने काल रहता है? वह जघन्य से एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। असाता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है? वह जघन्य से एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात समय मात्र होता है।

सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। सम्मत्त० भुजगारवेदग० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। तिण्णं पि वेदाणं मदिआवरणभंगो। णिरयाउअस्स अप्पदर-अवत्तव्वपदाणि अत्थि, सेसपदाणि णत्थि।

तेण तत्थ कालो सुगमो। मणुस्साउअस्स भुजगारवेदओ (अ प्रतौ 'भुजगारउदओ' इति पाठः।) जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु० विसेसाहियं, गोवुच्छरयणाए उक्कस्सियाए वि अंतोमुहुत्तदीहत्तादो। अवट्ठिदवेदगो जह० एगसमओ, उक्क० अट्ठसमया। मणुस्साउअस्स अप्पदरओ जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि समऊणाणि। तिरिक्खाउअस्स मणुस्साउअभंगो। देवाउअस्स णिरयाउअभंगो।

सम्यग्मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्य से एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। उसका अवस्थित उदय जघन्य से एक समय और उत्कर्ष से संख्यात समय मात्र रहता है। सम्यक्त्व प्रकृतिका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ समय कम छ्यासठ सागरोपम मात्र होता है। मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्य से एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। तीनों भी वेदोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। नारकायुके अल्पतर और अवक्तव्य ये दो पद हैं, शेष पद नहीं हैं। इस कारण उसके विषयमें कालप्ररूपणा सुगम है। मनुष्यायुका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्त विशेष अधिक काल तक रहता है, क्योंकि, उत्कृष्ट भी गोपुच्छरचना अन्तर्मुहूर्त दीर्घ होती है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय मात्र रहता है। मनुष्यायु का अल्पतर उदय उत्कर्षसे एक समय कम तीन पल्योपम मात्र रहता है। तिर्यंच आयु की प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है। देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है।

णिरयगइणामाए भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदर० जह० एगसमओ उक्क० पलिदो० असंखे०। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। मणुसगइ-तिरिक्खगइ-देवगइणामाणं णिरयगइभंगो।

नरकगति नामकर्मका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है। उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय रहता है। मनुष्यगति, तिर्यंचगति और देवगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है।

ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं मदिआवरणभंगो। आहारसरीरस्स णिद्दाए भंगो। समचउरससंठाण-वज्जरिसहनाराणसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअ-अलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-

पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं मदि-आवरणभंगो। चदुसंठाण-पंचसंघडणाणं भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। अवट्ठिदं सुगमं। हुंडसंठाण-णीचागोदाणं मदिआवरणभंगो। उज्जोवणामाए भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोव० असंखे० भागो। आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं भुजगारो अप्पदरो वा उक्क० अंतोमुहुत्तं। सेसं सुगमं। एसुवदेसो णागहत्थिसमणाणं (अ-का प्रत्योः 'खवगाणं', ता प्रतौ 'खवणाणं' इति पाठः।)।

औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। आहारकशरीरकी प्ररूपणा निद्राके समान है। समचतुरस्त्रसंस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र, और पाँच अंतराय; इन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। चार संस्थान और पाँच संहननों का भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय, उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र रहता है। उनके अवस्थित उदयकी प्ररूपणा सुगम है। हुण्डक संस्थान और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। उद्योत नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोका भुजाकार और अल्पतर उदय उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। शेष प्ररूपणा सुगम है। यह उपदेश नागहस्ती श्रमणका है।

अण्णेण (अ प्रतौ 'अणेण' इति पाठः।) उवएसेण मदिआवरणस्स भुजगारउदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि सव्वट्ठे (ता प्रतौ 'देसूणाणि। सव्वट्ठे' इति पाठः।)। अप्पदरवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि संखेज्जवस्सब्भहियाणि णेरइयस्स (ता प्रतौ 'वस्सब्भहियाणि णेरइयस्स' इति पाठः।) संकिलेसेण। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चदुण्णं दंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। असादस्स भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। अप्पदर० पलिदो० असंखेज्जदिभागो। णिरयगइणामाए भुजगारवेदओ अप्पदरवेदओ वा तेत्तीसं सागरोव० देसूणाणि। णिरयगइणामाए अप्पदरवेदयकालस्स साहणं (म प्रतौ 'साहूणं' इति पाठः।) वुच्चदे। तं जहा -- णिसेयगुणहाणिट्ठाणाणंतरं थोवं। जोगट्ठाणेसु जीवगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि। मणुसगइणामाए तिरिक्खगइणामाए च भुजगारो अप्पदरो (अ-का प्रत्योः 'भुजगारअप्पदरो' इति पाठः।) च तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। देवगइणामाए भुजगारो अप्पदरो च

तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। ओरालियसरीर-तंदंगोवंग-बंधण-संघादाणं पढमसंघडणस्स मणुसगइभंगो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो। सव्वासिं धुवबंधपयडीणं परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं च देवगइभंगो। अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-जसगित्तीणं णिरयगइभंगो। उज्जोवणामाए ओरालियसरीरभंगो। उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णाणावरणभंगो। णीचागोदस्स भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरोवमस्स देसूणाणि। एदम्हि उवदेसे जाणि कम्माणि ण भणिदाणि तेसिं कम्माणं णत्थि दो उवदेसा, पढमेण चेव उवदेसेण (ता प्रतौ 'चेव (दो) उवदेसेण' इति पाठः।) ताणि णेयव्वाणि।

अन्य उपदेशके अनुसार मतिज्ञानावरणके भुजाकार वेदकका काल सर्वार्थसिद्धिमें कुछ कम तैंतीस सागरोपम प्रमाण है। उसके अल्पतर वेदकका काल नारकीके संक्लेशके कारण संख्यात वर्ष अधिक तैंतीस सागरोपम मात्र है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। असाता वेदनीयके भुजाकार वेदकका काल कुछ कम तैंतीस सागरोपम मात्र है। उसके अल्पतर वेदकका काल पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र है। नरकगति नामकर्मके भुजाकारवेदक व अल्पतर वेदकका काल कुछ कम तैंतीस सागरोपम मात्र है। नरकगति नामकर्मके अल्पतर वेदकके कालका साधन कहा जाता है। वह इस प्रकार है -- निषेकगुणहानिस्थानोंका अन्तर स्तोक है। योगस्थानोंमें जीवगुणहानिस्थानोंके अन्तर असंख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्म और तिर्यंचगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तीन पल्योपम काल मात्र रहता है। देवगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तैंतीस सागरोपम काल मात्र रहता है। औदारिकशरीर व उसके अंगोपांग, बन्धन और संघातकी तथा प्रथम संहननकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरअंगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी तथा परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त, विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा भी देवगतिके समान है। अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्तिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा औदारिक शरीरके समान है। उच्चगोत्र और पाँच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। नीचगोत्रका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तैंतीस सागरोपम काल मात्र रहता है। इस उपदेशमें जिन कर्मोंका कथन किया गया है उन कर्मोंके विषयमें दो उपदेश नहीं हैं, उनको प्रथम ही उपदेशके अनुसार ले जाना चाहिये।

एयजीवेण अंतर (अ-का प्रत्योः 'अंतरे' इति पाठः।) पवाइज्जंतेण उवएसेण वत्तइस्सामो। तं जहा -- णाणावरणस्स भुजगारवेदयंतरं अप्पदरवेदयंतरं वा जह० एगसमओ उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिदवेदयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० अणंतकालं। चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णाणावरणभंगो। सव्वकम्माणमवट्ठियवेदयंतरस्स वि णाणावरणभंगो। सेसाणं कम्माणं भुजगार-अप्पदरवेदयंतरं पगदिउदयादो भुजगारकालादो (प्रतिषु '- कालो' इति पाठः।) च साधेदूण भाणियव्वं। णाणाजीवेहि कालो अंतरं सण्णियासो च एत्थ कायव्वो।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा प्रवाहस्वरूपसे आये हुए उपदेशके अनुसारही की जाती है। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरणके भुजाकारवेदक और अल्पतर वेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। उसके अवस्थितवेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है। चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अन्तरकालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। सब कर्मोंके अवस्थितवेदकके अन्तरकालकी भी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। शेषकर्मोंके भुजाकार व अल्पतर वेदकोंके अन्तरकालका कथन प्रकृतिउदय और भुजाकारकालसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, अन्तर और संनिकर्षका भी कथन यहाँपर करना चाहिये।

एत्तो अप्पाबहुअं। तं जहा -- मदिआवरणस्स अवट्ठिदवेदया थोवा। अप्पदरवेदया अणंतगुणा। भुजगारवेदया संखेज्जगुणा। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। णिद्दाए अवट्ठिदवेदया थोवा। अवत्तव्ववेदया अणंतगुणा। अप्पदरवेदया असंखे० गुणा। भुजगारवेदया संखे० गुणा। पयला-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिद्दाभंगो। मिच्छत्तस्स अवत्तव्ववेदया थोवा। अवट्ठिदवेदया अणंतगुणा। अप्पदर० अणंतगुणा। भुजगार० संखे० गुणा। सम्मत्तस्स अवट्ठिदवेदया थोवा। भुजगारवेदया संखे० गुणा (सत्कर्मपंजिकायां 'असंखेज्जगुणआ' इति पाठः।)। अवत्तव्ववेदया असंखे०गुणा। अप्पदरवेदया असंखे० गुणा। सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिद० थोवा। भुजगार० असंखेज्जगुणा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। णवुंसयवेदस्स (अ-का प्रत्योः 'णवुंसयवेदस्स' इति पाठः।) मिच्छत्तभंगो। इत्थिपुरिसवेदाणं अवट्ठिदवेदया थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसा०।

यहाँ अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है -- मतिज्ञानावरणके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी

प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्राके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, सातावेदनीय, असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है। मिथ्यात्वके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं। अवस्थितवेदक अनन्तगुणे है। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। सम्यक्त्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं।

देव-णेरइयाउआणं अवत्तव्ववेदया थोवा। अप्पदर० असंखे० गुणा। मणुसाउअस्स (ता प्रतौ 'असंखे० गुणा। ..... । मणुसाउअस्स' इति पाठः।) अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्ववेदया असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदरवेदया संखे०(सत्कर्मपंजिकायां 'असं०' इति पाठः।) गुणा। तिरिक्खाउअस्स अवत्तव्ववेदया थोवा। अवट्ठिद० (अ-का प्रत्योः 'उच्चागोद०', ता प्रतौ 'उच्चागोद० (अवट्ठिद)' इति पाठः।) अणंतगुणा। भुजगारवेदया अणंतगुणा। अप्पदरवेदया संखे० गुणा।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं। अल्पतर वेदक असंख्यातगुणे हैं। मनुष्यायुके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं। तिर्यंचआयुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं। अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं।

णिरयगइणामाए अवट्ठिद० थोवा। अप्पदर० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। भुजगार० असंख० गुणा। तिरिक्खगइणामाए अवत्तव्ववेदया थोवा। अवट्ठिद० अणंतगुणा। अप्पदर० अणंतगुणा। भुजगार० संखे० गुणा। मणुसगइणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० विसे०। भुजगार० असंखे० गुणा। देवगदिणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसे०। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-परघाद-उज्जोव-उस्सास-बादर-सुहुम-साहारण-जसकित्ति-अजसकित्तीणं अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाणाणं देवगइभंगो।

नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। तिर्यंचगति नामकर्मके अवक्त्ववेदक स्तोक हैं। अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। देवगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं। औदारिकशरीर, हुंडकसंस्थान, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, बादर, सूक्ष्म, साधारण, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीर और समचतुरस्त्र संस्थानकी प्ररूपणा देवगतिके समान है।

जाओ पयडीओ धुवबंधीओ ताणमवट्ठिदवेदया थोवा। अप्पदर० अणंतगुणा। भुजगार० संखे० गुणा। असंपत्तसेवट्ट० अवट्ठिद० थोवा। अप्पदर० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। चदुण्णं सठाणाणं पंचण्णं संघडणाणं च अवट्ठिय० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। णिरयाणुपुव्वीणामाए अवट्ठिद० थोवा। अप्पदर० ० असंखे० गुणा। भुजगार०। विसे०। अवत्तव्व० विसे०। एवं देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए। मणुस्साणुपुव्वीणामाए अवट्ठिय० थोवा। भुजगार० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० विसे०। अप्पदर० विसेसा०। एवं तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए। णवरि भुजगार० अणंतगुणा।

जो प्रकृतियाँ ध्रुवसम्बन्धी हैं उनके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। असंप्राप्तसृपाटिकासंहननके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। चार संस्थानों और पाँच संहननोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। नारकानुपूर्वीके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं। अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा करना चाहिये। मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं। अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार तिर्यगानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा है। विशेष इतना है कि उसके भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं।

आदाव-अपसत्थविहायगइ-दुस्सरणामाणं अवट्ठिदवेदया थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिरिक्खगइभंगो। अपज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदर० संखे० गुणा। सुस्सरणामाए अवट्ठिय० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। पज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदर० संखे० गुणा।

आतप, अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वर नामकर्मोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। अपर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं। सुस्वरनामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। पर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं।

ट्ठिदीणं (ता प्रतौ 'संखे० गुणा। गुणट्ठिदीणं ' इति पाठः।) बंधेण ओकड्डुक्कड्डणाए (च) पदेसुदयस्स वड्ढी हाणी वा होदि, एदेण हेदुणा पदेसुदयभुजगारे अण्णारिसं (अ-का प्रत्योः 'भुजगारण्णासरिसं', ता प्रतौ 'भुजगार० अण्णासिं' इति पाठः।) अप्पाबहुअं भवदि। तं जहा -- णिरयगइणामाए थोवा अवट्ठिय०। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा (अ प्रतौ नास्तीदं वाक्यम्।) । भुजगार० असंखे० (सत्कर्मपंजिकायां तु 'संखे०' इति पाठः।) गुणा। एदेण अणुमाणेण मग्गिदूण (प्रतिषु 'मज्झिदूण' इति पाठः। सत्कर्मपंजिकायामेतस्य स्थाने 'अणुमाणेऊण' इत्येतत्पदमुपलभ्यते।) सव्वकम्माणं णेयव्वं। एदं पुणो हेदुणा अप्पाबहुअं ण पवाइज्जदि (प्रतिषु 'पाविज्जदि', सत्कर्मपंजिकायां तु 'पवाइज्जदि' इति पाठः।) । एवं पदेसभुजगारो समत्तो।

स्थितियोंके बन्ध, अपकर्षण और उत्कर्षणसे प्रदेशादेयकी वृद्धि और हानि होती है; इस हेतुसे प्रदेशादयसम्बन्धी भुजाकारके विषयमें अन्य प्रकार अल्पबहुत्व होता है। यथा -- नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। इस अनुमानसे खोजकर सब कर्मोंके उक्त अल्पबहुत्वको ले जाना चाहिये। परन्तु यह हेतुप्ररूपित अल्पबहुत परम्परागत नहीं है। इस प्रकार प्रदेशभुजाकार समाप्त हुआ।

एत्तो पदणिक्खेवो --मदिणाणावरणस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसिओ अप्पाए सम्मत्तद्धाए संजमद्धाए च सव्वलहुं चरिमसमयछदुमत्थो जादो तस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स पढमसमयओहिलद्धिस्स उक्कस्सिया मदिआवरणस्स पदेसुदयवड्ढी। कुदो? ओहिणाणवुड्ढीए अणहिमुहस्स (अ प्रतौ 'अणहिमाहस्स', का प्रतौ 'अणहिप्पायस्स', ता प्रतौ 'अणहिमा (मु)हस्स' इति पाठः।) गुणसेडिपदेसगुणगारादो तदहिमुहगुणसेडिपदेसगुणगारस्स असंखे० गुणत्तादो। कधमेदं णव्वदे? सुत्तण्णहाणुववत्तीदो। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पुण झीयमाणोहिक्खओवसमाणं (ता प्रतौ 'ओहिणाणोहिदंसणावर(णा)णं पुण ज्झीयमाणेहि खओवसमाणं' इति पाठः।) तत्तो तग्गुणयारवड्ढी असंखे० गुणा।

यहाँ पदनिक्षेपकी प्ररूपणा की जाती है -- मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक जीव अल्प सम्यक्त्वकालमें और अल्प संयमकालमें शीघ्र ही अंतिम समयवर्ती छद्मस्थ हुआ है उस समय प्रथम समयवर्ती अवधिलब्धियुक्त अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके मतिज्ञानावरण सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशोदयवृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि जो जीव अवधिज्ञानकी वृद्धिके अभिमुख नहीं है उसके गुणश्रेणिरूप प्रदेश गुणकारकी अपेक्षा तदभिमुख जीवका गुणश्रेणिरूप प्रदेशगुणकार असंख्यातगुणा होता है।

शंका -- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान -- वह सूत्रकी अन्यथानुपपत्तिसे जाना जाता है।

परन्तु हीयमान अवधिक्षयोपशमयुक्त अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उक्त गुणकारवृद्धि उससे असंख्यातगुणी है।

एवं सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु (ता प्रतौ 'केवलणाणावर (णा०)णं चक्खु' इति पाठः।) अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च वत्तव्वं। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० वड्ढी कस्स? चरिमसमयछदुमत्थस्स, जस्स पढमसमयणट्ठा ओही, तस्स। णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? उवसंतकसायस्स जाधे सगपढमसमयगुणसेडिसीसयं पवेदेदि (ता प्रतौ 'वेदेदि' इति पाठः।) तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो होदूण से काले सव्वविसुद्धो जादो तस्स सव्वविसुद्धस्स जं गुणसेडिसीसयं तम्हि उदयमागदे जो थीणगिद्धितियस्स अण्णदरिसे पयडीए पढमसमयवेदगो तस्स उक्क० वड्ढी।

इसी प्रकार (मतिज्ञानावरणके समान) श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण और केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिके स्वामीका कथन करना चाहिये।

अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? उस अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके जिसकी अवधिलब्धि प्रथम समयमें नष्ट हुई है, उसके होती है। निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह उपशान्तकषाय जीवके होती है, जब वह अपने प्रथम समय सम्बन्धी गुणश्रेणिशीर्षका वेदन करता है, तब उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो अधःप्रवृत्तसंयत जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशसे संयुक्त होकर अनन्तर कालमें सर्वविशुद्धिको प्राप्त होता है उस सर्वविशुद्ध जीवका जो गुणश्रेणिशीर्ष है उसके उदयको प्राप्त होनेपर जो स्त्यानगृद्धि आदि तीनमेंसे अन्यतर प्रकृतिका प्रथम समयवर्ती वेदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है।

चदुण्णं णाणावरणीयाणं तिण्णं दंसणावरणीयाणं उक्क० हाणी कस्स? जो पढमसमयउवसंतकसाओ मदो संतो से काले देवो (अ प्रतौ 'मदो संते से काले देवे' इति पाठः।) जादो तस्स अंतोमुहुत्तदेवस्स जाधे गुणसेडिसीसयं पढमसमयणिज्जिण्णं ताधे उक्कस्सिया हाणी। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० हाणी कस्स? परिवदमाणयस्स सुहुमसांपराइयस्स जाधे अपच्छिमं उवसंतकसाय गुणसेडिसीसयं णिज्जरिज्जमाणं णिज्जिण्णं ताधे तस्स उक्कस्सिया हाणी। णवरि पढमसमयउप्पण्णओहिणाणस्से त्ति वत्तव्वं।

चार ज्ञानावरणीय और तीन दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो प्रथम समयवर्ती उपशान्तकषाय जीव मरकर अनन्तर कालमें देव हो जाता है उस अन्तर्मुहूर्तवर्ती देवका गुणश्रेणिशीर्ष जब प्रथम समय निर्जराप्राप्त होता है तब उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? श्रेणिसे गिरते हुए सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका जब निर्जीर्यमाण अन्तिम उपशान्तकषाय गुणश्रेणिशीर्ष निर्जीर्ण हो चुकता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। विशेष इतना है कि अवधिज्ञान उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें, यह कहना चाहिये।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीयाणमुक्कस्समवट्ठाणं कस्स? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसादो तप्पाओग्गमज्झिमपरिणाममुक्कस्सविसोहिं गदो से काले वि तारिसिं विसोहिं गदो पलिदो० असंखे० भागपडिभागब्भहिया गुणसेडी जादो, जावे एदाणि गुणसेडिसीसयाणि पवेदेदि ताधे तस्स उक्कस्समवट्ठाणं। एवं सेसाणं पि कम्माणं उक्कस्सवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं सामित्तं जाणिऊण वत्तव्वं।

पाँच ज्ञानावरणीय और नौ दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है? जो अधःप्रवृत्त संयत जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे तत्प्रायोग्य मध्यम परिणाम रूप उत्कृष्ट विशुद्धको प्राप्त होता

है व अनन्तर कालमें भी वैसी विशुद्धिको प्राप्त होता है जिससे गुणश्रेणि पल्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अधिक हो जाती है, जब वह इन गुणश्रेणिशीर्षकोंका वेदन करता है तब उसके उपर्युक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी वृद्धि, हानि और अवस्थानके स्वामित्वका जानकर कथन करना चाहिये।

जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च सव्वकम्माणमेक्को पदेसो अण्णदरस्स भवे। णवरि देवणिरयाउअं तित्थयरणामकम्माणि मोत्तूण वत्तव्वं।

सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान एक प्रदेश स्वरूप होकर अन्यतर जीवके होते हैं। विशेष इतना है कि देवायु, नारकायु और तीर्थंकर नामकर्मको छोड़कर यह कथन करना चाहिये।

एत्तो अप्पाबहुअं -- पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। उक्कस्सिया हाणी असंखेज्जगुणा। उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा। णिद्दा-पयलाणं पि उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। उक्क० हाणी असं० गुणा। वड्ढी असंखेज्जगुणा। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसा०। अट्ठण्णं कसायाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसाहिया। सम्मत्त-णवणोकसाय-चदुसंजलणाणं णाणावरणभंगो। सम्मामिच्छत्तस्स मिच्छत्तभंगो। देव-णिरयाउआणं उक्क० हाणी कस्स? दसवस्ससहस्साउट्ठिदीएसु देव-णेरइएसु उववण्णस्स दुसमयतब्भवत्थस्स। वड्ढी अवत्थाणं वा णत्थि। मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी विसेसाहिया। तिण्णं गइणामाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसे०। मणुसगइणामाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे०गुणा। ओरालियसरीरणामाए मणुसगइभंगो। तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-सुस्सर-दुस्सर-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। वेउव्विय-आहारसरीर-पंचसंघडण-चदुआणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसाहिया।

यहाँ अल्पबहुत्वका कथन करते हैं -- पाँच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पाँच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। निद्रा व प्रचलाका

भी अवस्थान स्तोक है। उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। आठ कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। सम्यक्त्व, नोकषाय और चार संज्वलन कषायोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिसे युक्त देवों व नारकियोंमें उत्पन्न हुए जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है। उनकी वृद्धि व अवस्थान नहीं है। मनुष्यायु और तिर्यगायुका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि विशेष अधिक है। तीन गति नामकर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। औदारिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। तैजसशरीर, कार्मणशरीर, छह संस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, सुस्वर, दुस्वर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, पाँच संहनन, चार आनुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है।

देव-णिरआउअ-तित्थयरवज्जाणं सव्वकम्माणं पि जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तुल्लाणि, एगपदेसपमाणत्तादो। तित्थयरणामाए जहण्णिया हाणी अधापमत्तकेवलिगुणसेडिसीसएसु उदयमागदेसु। जह० वड्ढी दुसमयकेवलिस्स। तदो हाणी थोवा। जहण्णिया वड्ढी असंखेज्जगुणा। अवट्ठाणं जहण्णमुक्कस्सं वा णत्थि। तित्थयरणामाए जहण्णिया हाणी थोवा। उक्कस्सिया हाणी विसेसाहिया। जहण्णिया वड्ढी असंखेज्जगुणा। उक्कस्सिया वड्ढी असंखेज्जगुणा। एवं पदणिक्खेवो समत्तो। एत्तो वड्ढिउदए अप्पाबहुए कदे तदो उदए त्ति अणुयोगद्दारं समत्तं होदि।

देवायु, नारकायु और तीर्थंकर प्रकृतियोंको छोड़कर सभी कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तुल्य हैं; क्योंकि, वे एक प्रदेश प्रमाण हैं। तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य हानि अधःप्रवृत्त केवली गुणश्रेणिशीर्षकोंके उदयप्राप्त होनेपर होती है। उसकी जघन्य वृद्धि द्वितीय समयवर्ती केवलीके होती है। इस कारण उसकी हानि

स्तोक है और जघन्य वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है। उसका जघन्य व उत्कृष्ट अवस्थान नहीं है। तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य हानि स्तोक है। उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है। जघन्य वृद्धि असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ। यहाँ वृद्धि-उदयविषयक अल्पबहुत्वके करनेपर उदय-अनुयोगद्वार समाप्त होता है।